International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Volume 7 Issue 1, January-2017, Impact Factor: 3.578

दुष्यन्त कुमार के काव्य में सामाजिक चेतना

डॉ. अनिता कुमारी
एसिस्टैंट प्रोफेसर , राजकीय महाविद्यालय, भिवानी

शोध–लेख सार

चेतना को मन की वह शक्ति माना है जिससे व्यक्ति आंतरिक और बाह्य बातों का अनुभव करता है। यह व्यक्ति की वह सचेतन अवस्था है जिसमें वह अपने अस्तित्व,भावनाओं तथा वातावरण के प्रति जागरूक रहता है। चेतन तत्व के बिना संसार में मानव अस्तित्व की कल्पना भी नही की जा सकती। चेतना ही व्यक्ति के प्रतिबोध को पुष्ट करती है। चेतना द्वारा प्राप्त ज्ञान ही मनुष्य को अन्य प्राणी जगत से विशिश्ट बनाता है। दुष्यन्त कुमार के काव्य में इस चेतन तत्व को जीवन्त रूप से देखा जा सकता है। उन्होने अपने काव्य में समाज और राजनीति संबंधी स्थितियों का यथार्थ अंकन बहुत ही सहज रूप से किया है।

मुख्य शब्द : चेतना, अस्तित्व ,साहित्यकार , समाज व राजनीति , समष्टि , वेदना

चेतना को मन की वह शक्ति माना है जिससे व्यक्ति आंतरिक और बाह्य बातों का अनुभव करता है। यह व्यक्ति की वह सचेतन अवस्था है जिसमें वह अपने अस्तित्व,भावनाओं तथा वातावरण के प्रति जागरूक रहता है। चेतन तत्व के बिना संसार में मानव अस्तित्व की कल्पना भी नही की जा सकती। चेतना ही व्यक्ति के प्रतिबोध को पुष्ट करती है। चेतना द्वारा प्राप्त ज्ञान ही मनुष्य को अन्य प्राणी जगत से विशिश्ट बनाता है। दुष्यन्त कुमार के काव्य में इस चेतन तत्व को जीवन्त रूप से देखा जा सकता है। उन्होने अपने काव्य में समाज और राजनीति संबंधी स्थितियों का यथार्थ अंकन बहुत ही सहज रूप से किया है।

दुष्यन्त कुमार हिन्दी साहित्य के उन श्रेष्ठ साहित्यकारों में से थे जिन्होने साहित्य की अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। उनका पूरा नाम दुष्यन्त कुमार त्यागी था। वे महान साहित्यकार थे लेकिन स्वयं को विद्वान नही मानते थे बल्कि एक साधारण व्यक्ति मानते थे। इस संदर्भ में वे स्वयं कहते है–

मैं एक साधारण आदमी हूँ और इतिहास और सामाजिक स्थितियो के संदर्भ में साधारण आदमी की पीड़ा, उतेजना, दबाव , अभाव और उसके संबंधो की उलझन को जीता और व्यक्त करता हूँ।''' सामाजिक का अभिप्रायः सामान्यतः सामाजिक होने के भाव या प्रवति से लिया जा सकता है। साहित्यकार या कवि भी समाज का एक अंग होने के कारण समाज से कटकर रचना नही कर सकता। दुष्यन्त कुमार के काव्य में समाज के प्रति संवेदना को सहज रूप से देखा जा सकता है।

कैसा दर्द है।

कोई नही सुनता।

पर इन आवाजों कों

और इन कराहों को

दुनिया सुने मैं ये चाहूँगा।

वे स्वयं कहते हैः– '' मैं तो खुद पाठक के रूप में, उस कविता की खोज में हूँ जो हर व्यक्ति की कविता हो और हर कंठ से फुटे।''

दुष्यन्त कुमार ने अपने 'जलते हुए वन का वसन्त' नामक काव्य संग्रह में दाम्पत्य प्रेम का वर्णन करते हुए कहा है–

पत्नी की मर्यादा

पति की मर्यादा से होती है।

'आत्माराम' कविता में दुष्यन्त कुमार ने स्वयं के 'कवि–मन' एवं 'व्यक्ति मन' के द्वन्द्व से स्पष्ट किया है कि आज व्यक्ति परस्पर एक दूसरे के प्रति ईर्ष्यालु और मौकापरस्त है। आज के व्यक्ति की परवशता एवं दुर्गति के बारे में कवि स्वयं की परवशता एवं दुर्गति के माध्यम से इंगित कर रहा है–

मेरे दिल पे हाथ रक्खो,मेरी बेबसी को समझो

मैं इधर से बन रहा हूँ,मैं इधर से ढ़ह रहा हूँ।

जनवादी कवि होने के कारण दुष्यन्त कुमार ने अपने साहित्य में सह–जीवन पर अत्यधिक बल दिया है। व्यक्ति व्यक्ति का सहयोग मिलकर सामाजिक सहयोग बनता है। उन्होने स्वंतत्र रूप से समाज में उत्पन्न विसंगतियों और मानव–मन की छटपटाहट को अभिव्यक्ति प्रदान की है। लोगो पर जो बीत रही थी, कवि ने उसी का यथार्थ वर्णन किया। कवि की इच्छा थी कि जो समाज में घटित हो रहा है वे उसमें परिवर्तन कर दे और उनकी गजलें समाज में क्रांति उत्पन्न करे ताकि लोगो को भी एकजुट होकर क्रान्ति करने की प्ररेणा मिले तथा उन्हें उनके अधिकार प्राप्त हो सके। इसके लिए छोटी सी क्रान्ति से काम नही चल सकता था, अपितु विशाल क्रान्ति की आवश्यकता थी। इसके लिए कवि कहता है–

वे समाज में यह दिखाना चाहते है कि छोटे से छोटे व्यक्ति का भी महत्व है। यह क्रान्ति की आग यदि जलती रही तो समाज से बुराई का अंत हो जाना संभव है, अन्यथा सभी को निराशा ही हाथ लगेगी। इसलिए कवि कहता है कि यदि तुम नही जागोगे तो तुम्हारे भीतर का मनुष्य स्वयं ही मर जायेगा और तुम्हारी आत्मा मृतक समान हो जायेगी। इसके लिए मात्र प्रवचन करने की आवश्यकता नहीं है अपितु ठोस कदम उठाने पड़ेगे–

दुष्यन्त कुमार ने दलित,बेबस,शोषित व पीड़ित जनता के प्रति कोरी सहानुभूति ही व्यक्त नही की, बल्कि उन्होने अगुवा के रूप मे ऐसी जनता का नेतृत्व भी किया है–

कौन –सा पथ कठिन है .....

मुझ को बताओ

मैं चलूंगा।

काव्य में वैयक्तिकता की भावना इन्हें कचोटती है। समष्टि को केन्द्र में रखकर जिस साहित्य की रचना नही की जाती तो ऐसे साहित्य को दुष्यन्त कुमार तुरन्त बदल देना चाहते है और समाज को भी प्रेरित करते है–

मेरे संग संग इन आवाजो ंसे जूझो

इनकी ध्वन्यिों को बदलो

इनके अर्थो को बदलो।''

दुष्यन्त कुमार के काव्य में आस्था–अनास्था का स्वर भी सुनाई देता है। आज का व्यक्ति खोखला है, महत्वाकांक्षाओ का दम्भ लेकर जीता है। जिस व्यक्ति में आस्था होती है वही जीवन पथ पर उन्नति करता है। अनास्था युक्त व्यक्ति सदैव पीछे रह जाता है। आधुनिक युग में आकर यह स्थिति अधिक भयावह हो जाती है, क्योकि मनुष्य की आवश्यकताएं बढ गई है और साधन सीमित हो गए है। दुष्यन्त कुमार जैसे कवियो के लिए यह स्थिति और भयानक बनकर सामने आती है। जिनके साथ अल्पायु में नया परिवार जुड गया हो ओर पढने के साथ–साथ आजीविका की चिंता रहती है। कवि की यह व्यक्तिगत वेदना सभी मनुष्यो की वेदना बन जाती है। क्योकि समाज में वह अकेला ही ऐसा प्राणी नही है। इसलिए भरे स्वर में कवि कहता है–

ये हमारे वक्त की सबसे सही पहचान है

कल नुमाईश में मिला वो चीथडे पहने हुए

मैने पूछा नाम तो बोला की हिन्दुस्तान है।

कवि ने अपनी गजलों में समाज की विद्रूपताओ का 'नमन' वर्णन किया है। वर्तमान समय में (स्थिति में) मनुष्य का कोई मोल नही रहा। पूँजीपति लोग उनका प्रयोग करने में मनमानी करते है। उन लोगों के पास रहने को घर और खाने को भोजन सुलभ नही है। वे भीखमंगो की तरह अपना जीवन यापन करते है और रात को फुटपाथ पर सो जाते है लेकिन उनके मन में विद्रोह की भावना उत्पन्न नही होती। न जाने उनके प्रतिकार की शक्ति कहाँ सुप्त हो गई है। कवि के लिए यह स्थिति असहनीय है और वह इसका विरोध करता हैः–

ये जुबाँ हमसे सी नही जाती

जिन्दगी है कि जी नही जाती।

उन्होने अपने काव्य में लोगो की चिल्लाहट,वेदना,रूदन , मजबूरी,दयनीयता आदि का अपनी गजलों में चित्रण किया है। इस सन्दर्भ में कवि ने कहा है–

कैसे – मंजूर सामने आने लगे है

गाते– गाते लोग चिल्लाने लगे है।

सन्दर्भ

1. दुष्यन्त कुमार, जलतें हुए वन का बंसत ,
2. दुष्यन्त कुमार,आवाजों के घेरे,
3. दुष्यन्त कुमार,जलते हुए वन का बंसत ,
4. दुष्यन्त कुमार,वही,
5. दुष्यन्त कुमार ,साये में धूप
6. वहीं,
7. वही,
8. दुष्यन्त कुमार , सूर्य का स्वागत
9. दुष्यन्त कुमार , आवाजों के घेरे,
10. दुष्यन्त कुमार,सायें में धूप,
11. दुष्यन्त कुमार,सायें में धूप,
12. वही